ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 15 कुल पृष्ठ-6 27 अगस्त से 2 सितम्बर, 2020 दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 आ. कृ.-08

समाज में समत्त्व, सद्भाव तथा सहयोग बढ़ाने का एक मात्र विकल्प है वेदोक्त धर्म का पालन

– स्वामी आर्यवेश

विद् धातु से वेद शब्द निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है ज्ञान। वेद हमारे धर्मग्रन्थ हैं जो संसार में सबसे अधिक प्राचीन हैं। वेद का ज्ञान सृष्टि के आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नामक चार ऋषियों के हृदयों में प्रकाशित किया। वेद का एक नाम श्रुति भी है। वेद अपौरुषेय एवं स्वतः प्रमाण है। प्राचीन भारतीय संस्कृति का मूलाधार वैदिक वाङमय ही है। संस्कृति के सभी अंगों को मानव जीवन के साफल्य के सभी साधनों पर इसमें मौलिकता से विचार किया गया। वेद चार हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ऋग्वेद का ऋषि अग्नि है। यह मस्तिष्क अर्थात् ज्ञान का वेद है। ऋग्वेद का अर्थ यह है कि जिसमें सब पदार्थों के गुणों और स्वभावों का वर्णन किया गया। यजुर्वेद का ऋषि वायु है। यह कर्मवेद है। जिसमें कर्मकाण्ड का विशद वर्णन है। क्योंकि यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म कहा गया है अतः इसमें यज्ञों का पूर्ण वर्णन है। मानव मात्र के लिए करणीय विभिन्न यज्ञों का विधान इसमें है। यज्ञों के अतिरिक्त भी विभिन्न प्रकार का ज्ञान और विज्ञान इस वेद में प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। सामवेद का ऋषि आदित्य है। यह हृदय या उपासना का वेद है। सामवेद तापत्रय से संतप्त मानवों को अपूर्व शांति प्रदान करता है। सामवेद समन्वय और उपासना से सम्बद्ध है। ज्ञान व कर्म के समन्वय का उदात्त रूप सामवेद है। अथर्ववेद का ऋषि अंगिरा है। इस वेद में नाना प्रकार की औषधियों का वर्णन करके शरीर को निरोग, स्वस्थ और शान्त रखने के उपाय बताये गये हैं। राष्ट्र में उपद्रव और अशांति होने पर राष्ट्र की सुरक्षा के लिए प्रयोग किये जाने वाले विभिन्न प्रकार के भयंकरतम् अस्त्र, शस्त्रों का वर्णन भी इस वेद में है। इसे युद्ध एवं शांति का वेद भी कहा जाता है।

वैदिक धर्म का तात्पर्य वेद पर आधारित धर्म से है। हमारे धर्म के आधार ये चार वेद ही हैं। मनुष्य के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के विषय में वेदों में जो कुछ नियम और कर्त्तव्य बताये गये हैं उन्हीं का प्रतिपादन एवं समर्थन वैदिक धर्म करता है। ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि तक इसी वेदोक्त धर्म को मानते आये हैं और यही सत्य सनातन वैदिक धर्म है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी भी इसी धर्म के समर्थक और उपदेशक रहे हैं। उनका कोई नया मत या पंथ स्थापित करने का लेशमात्र भी उद्देश्य नहीं था। महाभारत से पूर्व तक जब तक संसार में वैदिक धर्म का बोलबाला रहा तब तक संसार में सुख, शांति रही। आज भी विश्व में यदि कोई सर्वमान्य मानव धर्म बन सकता है तो वह केवल वैदिक धर्म ही है।

आज धर्म का जो स्वरूप हमारे सामने है, यदि उसे ही धर्म मान लिया जाये तो मैं समझता हूँ कि इससे बड़ा अधर्म और कोई नहीं हो सकता। आज चारो तरफ धर्म के नाम पर जो वैर–वैमनस्य और पाखण्ड फैल रहा है तथा मानव एक दूसरे के खून के प्यासे हो रहे हैं उसका कारण धर्म में आई विकृति ही है। भ्रमवश आज लोग मत या मजहब को ही धर्म का नाम देने लगे हैं। यही कारण है कि धर्म की विशालता एवं सार्वभौमिकता को लोगों ने समाप्त करके उसे अपने–अपने संकुचित दायरों में बांट दिया है। तथाकथित धार्मिक गुरुओं और घर–घर पैदा हो रहे तथाकथित भगवानों का काम भी अपने–अपने तथाकथित धर्म या पन्थ का विस्तार करना ही रह गया है। इन लोगों ने धर्म के वास्तविक स्वरूप को बदलकर रख दिया और अपने–अपने स्वार्थों के वशीभूत होकर धर्मभीरू जनता को बरगलाकर ठगने का कार्य कर रहे हैं और यही कारण है कि वर्तमान में कुछ बहुरूपिये सन्त और तथाकथित भगवान अपने इन्हीं कुकृत्यों के कारण जेल की सीखचों के अन्दर पहुँचे हैं। इन तथाकथित धर्मगुरुओं ने, देखा जाये तो धर्म की हत्या करने का पाप किया है और अब यह मरा हुआ धर्म ही हमें मार रहा है। मनु महाराज की यह उक्ति आज एकदम सही अर्थ में चरितार्थ हो रही है – 'धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः।' अर्थात् मरा हुआ धर्म मार देता है और रक्षा किया हुआ धर्म हमारी रक्षा करता है और इसी कारण धर्म के नाम पर साम्प्रदायिक दंगे और खून–खराबा हो रहा है। आज व्यक्ति विभिन्न प्रकार के पापों को करके भी उसके फल से बचने के लिए अनेक प्रकार के उपाय खोज रहा है और इसी खोज ने ही धर्म को विकृत किया है। हजारों धर्मगुरु और तथाकथित भगवान लोगों को पापों से मुक्त होने का रास्ता बता रहे हैं और स्वयं जेल की सीखचों के पीछे हैं।

आज स्थिति यह है कि विभिन्न मत–पंथों के कर्णधारों ने अपने आपको या अपने–अपने आदर्श पुरुषों को अवतारी भगवान घोषित कर रखा है और उनकी कल्पित मूर्तियाँ बनाकर ढोंग, पाखण्ड रचकर लोगों को मूर्ख बनाने का कार्य जोर–शोर से चल रहा है। उनके दर्शन मात्र से पाप नष्ट हो जाते हैं। पुण्योदय हो जाता है और मनुष्य स्वर्गधाम को प्राप्त कर लेता है। ऐसा घोषित किया जा रहा है तथा आचरण के स्थान पर बाह्य आडम्बर को ही धर्म मान लिया गया है। आज वह व्यक्ति अपने आपको अधिक धर्मात्मा समझता है जो नित्य गंगा स्नान करता है, बाबा जी के दर्शन करता है, उन्हें नित्य भोग लगाता है, वेदों के स्थान पर अन्य मानव निर्मित तथाकथित धर्मग्रन्थों का पाठ करना ही स्वाध्याय समझता है और वैदिक आचरण को भूल गया है। यह सब धर्म के नाम पर प्रचलित धर्म का विकृत रूप है। इन

अगले पृष्ठ पर जारी

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पृष्ठ 1 का शेष

समाज में समत्त्व, सद्भाव तथा सहयोग बढ़ाने का एक मात्र विकल्प है वेदोक्त धर्म

सब के कारण देशवासियों का कितना पतन हुआ है यह शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। जहाँ यह खुलकर उद्घोष किया जाता हो कि तुम पाप करो, हम तुम्हें क्षमा करा देंगे। वहाँ अनाचार, अत्याचार, अन्याय, अधर्म, असत्य तथा आतंक नहीं फैलेगा तो और क्या होगा। वेद में कहा गया है – 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। नाभुक्तम् क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि।।' अर्थात् बिना भोगे कर्म कभी नष्ट नहीं होते। हम जैसा कर्म करेंगे वैसा फल अवश्य भोगना पड़ेगा।

वास्तविक धर्म क्या है या वैदिक धर्म क्या है इसे समझने के लिए इस शब्द पर विचार करना होगा – धर्म संस्कृत भाषा का शब्द है जो धृ धातु से निष्पन्न होता है। अतः 'धारयते इति धर्मः' अर्थात् जिसे धारण किया जाये उसे धर्म कहते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो धर्म आचरण में ढालने की कला है। अर्थात् धारण करने से धर्म, धर्म कहलाता है। धर्म व्यक्ति की चतुर्दिक उन्नति का आधार है। धर्म एक जीवन पद्धति है। लेकिन प्रश्न उठता है कि धारण क्या किया जाये? क्या केवल बाहरी दिखावे या कुछ चिन्हों आदि को धारण करने से व्यक्ति धार्मिक बन जाता है? नहीं! बिल्कुल नहीं। क्योंकि कहा गया है – 'न लिंङ्गम् धर्म कारणम्।' अर्थात् बाहर के चिन्ह धारण करने से कोई व्यक्ति धार्मिक नहीं बन सकता। अन्यत्र कहा गया कि 'आचारः परमो धर्मः' अर्थात् सदाचार ही परम धर्म है। यदि व्यक्ति सदाचारी नहीं है तो उसे कभी भी धार्मिक नहीं माना जा सकता। वैशेषिक दर्शन में धर्म की व्याख्या निम्न प्रकार की गई है – 'यतोऽभ्युदय निः श्रेयस सिद्धिः स धर्मः।' अर्थात् जिसके आचरण करने से संसार में उत्तम सुख और निः श्रेयस अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति हो उसी का नाम धर्म है। महर्षि मनु ने धर्म के दस लक्षण बताये हैं :– 'धृतिः, क्षमा, दमोऽस्तेयम, शौचम्, इन्द्रिय निग्रह। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकम् धर्म लक्ष्मणम्।।' अर्थात् धृतिः, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध ये दस धर्म के लक्षण हैं। इनको जीवन में धारण कर तद्नुकूल आचरण करना ही धर्म कहलाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेदोक्त धर्म का सार ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में इस प्रकार दिया है – 'जो न्याय अर्थात् पक्षपात को छोड़कर सत्य का आचरण तथा असत्य का परित्याग करना उसी को धर्म कहते हैं। यही धर्म का वास्तविक स्वरूप है। वैदिक धर्म हमें आशावादी बनाता है तथा बुरे कर्मों को त्यागकर अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देता है। इस लोक और परलोक की सिद्धि के उपदेशों से वेद भरे पड़े हैं। वेद में अध्यात्म और भौतिक का अद्भुत समन्वय है। समत्व की भावना का उपदेश देते हुए वेद परोपकारी और त्यागमय जीवन जीने की प्रेरणा देकर आपसी प्रेम और सौहार्द का वातावरण बनाकर इस धरती को स्वर्गसम बनाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। वैदिक धर्म हमें सब प्रकार के पाखण्डों और आडम्बरों से उबारकर सत्य धर्म के साथ हमारा परिचय कराता है। परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति का सच्चा ज्ञान हमें वैदिक धर्म में प्राप्त होता है। वेद में व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और पूरे विश्व के समग्र विकास की शिक्षाएं निहित हैं। अपने सर्वतोमुखी विकास के लिए व्यक्ति को आज वेद की शरण में आना होगा। अन्य कोई रास्ता नहीं है। आज व्यक्ति जिस अधर्म के रास्ते पर चलकर भटककर दुःख उठा रहा है उससे वेद के पढ़ने और पढ़ाने से ही छुटकारा मिल सकेगा। उसी के अध्ययन से ये पता चलेगा कि धर्म का मर्म आचरण है। धर्म का सार यह है कि जो अपने प्रतिकूल आचरण है अर्थात् जो व्यवहार आप अपने साथ कराने को तैयार नहीं हैं वह दूसरों के साथ भी न करें। जब प्रत्येक व्यक्ति इस प्रकार से सोचने, समझने और करने लगेगा तो इस धरा पर स्वतः ही स्वर्ग का सा वातावरण बनने लगेगा। फिर धर्म के नाम पर दंगे–फसाद नहीं होंगे और न कोई किसी का घर उजाड़ेगा। फिर तो हर कोई, हर किसी की भलाई चाहेगा। लेकिन इस प्रकार की मनःस्थिति बनाने के लिए हमें किसी तथाकथित भगवान या गुरु के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि इससे व्यक्ति अपने–अपने दायरों में बंधकर धर्म को अत्यधिक संकुचित कर देता है। ऐसे स्थान पर जाने से व्यक्ति की बुद्धि विकसित होने की बजाय और अधिक कुंठित हो जाती है। क्योंकि ऐसे लोगों को तो अपने मत, मजहब या गुरु के आगे और कोई दुनिया दिखाई ही नहीं देती। यही भावना परोपकार और त्याग को विस्मृत करके उसे स्वार्थी और कूप–मंडूक बना देती है।

इसलिए आज धर्म को व्यवहार और आचरण में लाने की बहुत आवश्यकता है, धार्मिक दिखने भर से काम नहीं चलेगा, बल्कि धार्मिक बनना होगा। धार्मिक बनने के लिए यम, नियम, दान–पुण्य, यज्ञ, ज्ञान एवं उपासना आदि अनेक उपाय हैं। वेदों में इनका ही निर्देश दिया गया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी वेद को ही उसकी सत्यता और सार्वभौमिकता के कारण स्वतः प्रमाण तथा परमात्मा द्वारा प्रदत्त ज्ञान मानते हैं। अतः वैदिक धर्म पर चलने से ही आज व्यक्ति की समस्त समस्याओं का समाधान हो सकता है।

प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली

सभी भारतीय संस्कृति के उपासकों का तथा सभी यज्ञ प्रेमियों का यज्ञ के लिए आह्वान

यज्ञ – ऋग्वेद में वर्णित दुर्लभ शारद यज्ञ।

यज्ञ के प्रवर्तक – हमारे पूज्य चरण स्वनाम धन्य स्व. पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज।

वर्तमान संचालक – समस्त सहयोगियों के साथ आचार्य महावीर सिंह।

यज्ञभूमि– हमारे पूज्य चरणों की तपःस्थली तथा उनकी कर्मभूमि, पवित्र रावी नदी के किनारे पर बना दयानन्द मठ चम्बा।

यज्ञ का आयोजन – बड़े–बड़े दीर्घसत्रीय यज्ञों की साक्षी पूज्य चरणों के द्वारा निर्मित दयानन्द मठ चम्बा की भव्य यज्ञशाला में।

यज्ञ का ध्येय – यज्ञ से तृप्त–संतृप्त सम्यक रूप से पूजित देवों, पितरों का आशीर्वाद व कृपा दृष्टि को प्राप्त करना।

किसलिए – वैदिक विचारधारा का वैदिक मान्यताओं का सुदूर पर्वतीय उपत्यकाओं तथा गिरि गह्वरों तक फैले दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र में प्रचार व प्रसार करने की सफलता के लिए।

अभिलाषा – द्युलोक, अंतरिक्ष लोक, पृथ्वी लोक इन सब लोकों में शांति का वास हो। जल, औषधियां, वनस्पतियां यहां तक कि जड़ चेतन रूप सभी देवजन शांति के दाता हो। शांति देने वाले हो। ज्ञान का प्रवाह भी शांति की ही बयार बहाने वाला हो। जो दिखाई दे रहे हैं जो न भी दिखाई रहे हैं ऐसे संसार के समस्त पदार्थ शांति का ही संचार करने वाले हों। यहां तक कि स्वयं शांति भी हमेशा–हमेशा शांति को ही देने वाली हो। कभी अशान्ति का रूप न धरे। अंत में चारों ओर से बरसने वाली सबको आनन्द विभोर करने वाली वह शांति हमें भी प्राप्त हो। जिस शांति के साथ हमारा अन्तिम सफर पूरा हो।

इसके लिए प्रयास – निर्माणशालाओं (शिक्षणालयों) को आरम्भ करना। जिनमें भारतीय संस्कृति के संस्कारों के पुट संपुटित कर गौरवशाली राष्ट्र की निर्माण सामग्री का, अर्थात् देश, जाति व समाज के लिए समर्पित उदात्त चरित्र वाले नवयुवक व नवयुवतियों का निर्माण करना तथा वैदिक विचारधारा से उन्हें तराशना तथा वैदिक मान्यताओं से उसे उन्हें सजाना लक्ष्य है। जिन पर भावी राष्ट्र का भव्य भवन खड़ा हो सके। व्यवस्थित समाज की सुन्दर वाटिका तैयार हो सके। जो अभिलाषित शांति के संवर्षण में सहायक हो।

सहायता, सहयोग – समाज में किसी भी तरह से, अभावग्रस्त, साधनहीन, सहायता व सहयोग के पात्र ईश्वर पुत्रों का तदनुकूल रूप से सहायता व सहयोग करने का प्रयास करना। ताकि समाज में शांति का संचार हो।

यज्ञों, महायज्ञों का चक्र चलाना – प्राणी, अप्राणी रूप जगत का सब प्रकार से रक्षा करने के लिए यज्ञों तथा महायज्ञों का चक्र हमारे गुरु जी ने अपनी इस कर्मभूमि पर प्रारम्भ किया। जो अब भी निरन्तर चल रहा है।

यज्ञो व अवति – ताण्डय ब्राह्मण के अनुसार यज्ञ समस्त जगत की सब प्रकार से रक्षा करता है। यज्ञों से एक सुन्दर वातावरण का निर्माण होता है। सुन्दर माहौल बनता है। जिस कारण सब ओर से शांति बरसती है। बस उसी शांति के संवर्षण के लिए हमारे गुरुदेव ने यज्ञों, महायज्ञों की श्रृंखला को शुरू किया।

यज्ञो उ देवानामन्नम – यह यज्ञ ही है जो देवताओं का अन्न हैं। इस यज्ञ से ही देव तुष्ट व पुष्ट होते हैं। शतपथ ब्राह्मण के मन्तव्य के अनुसार यज्ञों से तृप्त विश्वेदेवाः शांति – सभी देवजन शांति की वर्षा करते हैं। विश्व में शांति वरसाने वाले इन मूल मंत्रों को जानने के बाद हमारे पूज्यों ने, हमारे पूज्य चरणों ने अपनी साधनास्थली, अपनी कर्मभूमि पर यज्ञों का चक्र चलाया और जाते–जाते चमत्कारों से चमत्कृत कर देने वाली जिनकी जादुई छड़ी को हमें सौंप गये। इन्हें करते रहने के लिए हमें कह गए। विशेषकर दुर्लभ शारद यज्ञ को। ऋग्वेद में वर्णित दिन–रात निरंतर किए जाने वाले दुर्लभ, जिसे कोई नहीं करता ऐसे शारद यज्ञ को करते रहने का आदेश देकर गए। क्योंकि यह यज्ञ राष्ट्र को गौरवशाली बनाने के लिए, राष्ट्र को शक्तिशाली व बलशाली

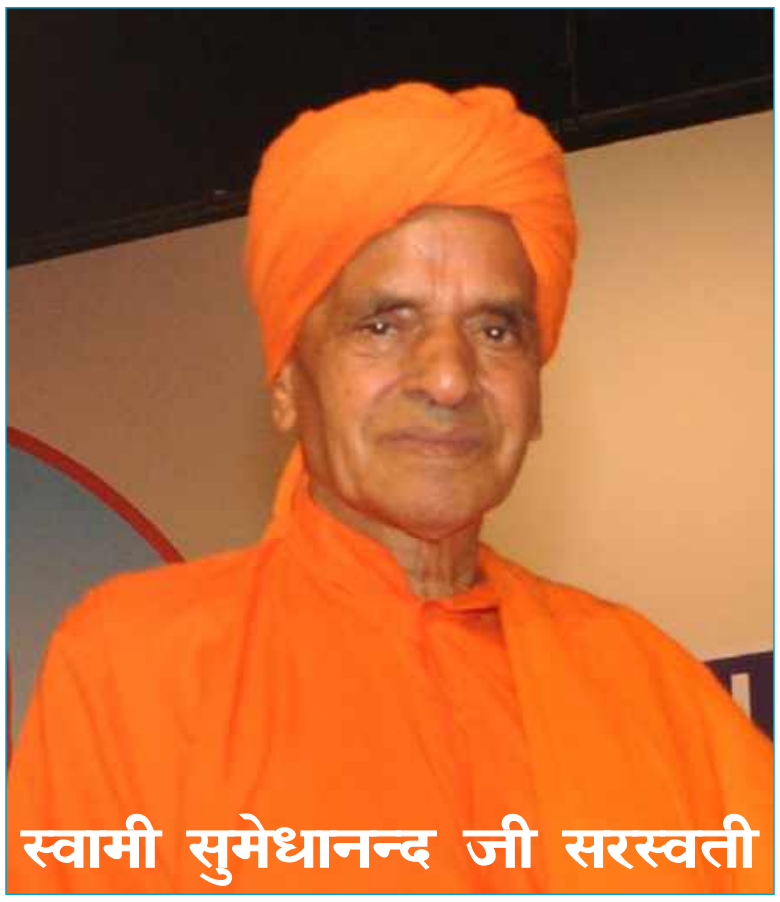

बनाने के निमित्त से किया जाता है। राष्ट्र में, समाज में तेजस्विता बढ़े। राष्ट्र व समाज ऐश्वर्यशाली व वैभवशाली हो इस भाव से यह यज्ञ किया जाता है। हमारे पूज्य चरणों के सामने हमेशा ही अपने सतयुग, त्रेता व द्वापर युग का गौरवमय भारतवर्ष का, आर्यावर्त का चित्र चलचित्र के समान घूमता रहता था। उसी युग की वापसी के लिए वे यत्नशील रहे। प्रयत्न करते रहे। अपने जीवनकाल में इन्हें करते रहें। भरपूर रूप में करते रहें। उसी प्रयास का भाग हमें भी बनाकर गए।

समय – उस दुर्लभ शारद यज्ञ का समय समीप आ रहा है। अक्टूबर माह में यह यज्ञ किया जाना है। 16 अक्टूबर, 2020 की प्रातः से 17 अक्टूबर, 2020 के 10 बजे तक यह यज्ञ आयोजित होगा जो दिन–रात निरंतर चलेगा।

परिस्थितियां – इस समय परिस्थितियां अनुकूल नहीं हैं। अर्थ का भारी संकट संस्था के सामने उपस्थित है। विद्यालय से प्राप्त फीसों में से विद्यालय के खर्चों को पूरा करने के बाद शेष राशि का प्रयोग हम इन यज्ञ कार्यों में कर देते थे। आजकल स्कूल बंद है। फीसें आ नहीं रहीं। अतः आपलोगों की ओर सहयोग की कामना से इस यज्ञ को पूर्ण कराने में अपनी भूमिका निभाने के लिए आवेदन व निवेदन करने के लिए उन्मुख हुआ हूँ।

प्रिय बन्धुओं! हम सबके सम्मिलित प्रयास से जहां देवों का पूजन होगा, वहीं पितरों का भी तर्पण होगा। जिसके अपरमित फल के भागी हम सब बनेंगे। इसलिए अवश्य ही सहयोग का लम्बा हाथ आगे बढ़ाना।

यज्ञो वा आश्रवणम् – उपदेश देना तथा मार्गदर्शन कराना भी यज्ञ है। शतपथ ब्राह्मण के इस वचन का पालन करते हुए जहां मैं इस महायज्ञ को करने के लिए आप लोगों को भी उद्बोधित करता हुआ तथा दिग्दर्शन कराता हुआ यज्ञ ही कर रहा हूँ।

वहीं 'देवरथो वा एषयज्ञः' यह यज्ञ देवरथ है। देवों का रथ है। एतेरेय ब्राह्मण के इस वाक्य के अनुसार आप लोग भी इस यज्ञ में अपनी सहायता व सहयोग के द्वारा देव बन इस रथ पर सवार होकर देवलोकों को प्राप्त करने वाले बन जायेंगे। देवोदानाद दान देने वाले देव होते हैं। यह यास्काचार्य ने कहा है।

इसलिए, 'भूरिशः भूरि में देहि' आप लोग ऐश्वर्यशाली हैं। ईश्वर तथा यह यज्ञ देव आप लोगों को और भी बहुत ऐश्वर्यशाली बनावें और आप लोग हमें इन यज्ञ कार्यों के लिए बहुत रूप में धन दो तथा आगे भी देते रहो। हमें ही नहीं समाज में हर शुभ कार्यों के लिए अपनी पवित्र कमाई को उड़ेलते रहो। हमें इसलिए दो।

क्योंकि, इस समय हमें धन की नितान्त आवश्यकता है। संस्था के दैनिक कार्य भी धनाभाव से प्रभावित हो रहे हैं और यह कष्टसाध्य, व्ययसाध्य दुर्लभ यज्ञ तो उपस्थित हो ही रहा है। जिसे हमने करना ही करना है। क्यों करना है, क्योंकि आज राष्ट्र को, समाज को यहां तक कि विश्व को इसकी नितांत आवश्यकता है। इस समय सारा का सारा विश्व त्रस्त है। उस त्रास को मिटाने का यही एकमात्र हल है और दूसरा पूज्य चरणों को दिए वचन को भी तो निभाना है। आप लोगों के लिए भी यह सौभाग्य का अवसर है।

काले न्यायगतम पत्रे विधिवत प्रतिपादितम्।
ददाति परमम् सौख्यम् इहलोके परत्र च।।

समय पर उचित पात्र को न्याय से उपार्जित धन यदि सत्कारपूर्वक दिया जाये तो वह इस लोक में भी और परलोक में भी महान सुख को देने वाला होता है। महर्षि व्यास के अनुसार यह समय उचित स्थान पर श्रद्धा से निष्ठा से अपनी पवित्र कमाई को समर्पित करने का समय है। इसलिए मेरे प्रियजनों इस यज्ञकर्म में अधिक से अधिक धन देने का प्रयास करना। पूज्य स्वामी जी के इस भगीरथ प्रयास को आगे बढ़ाने में आप सब हमारा भरपूर रूप से सहयोग करें। उपस्थित इस अवसर का भरपूर लाभ उठाएं। ईश्वर सबका कल्याण करें।

बैंक का नाम –'स्टेट बैंक ऑफ इंडिया'
खाता संख्या–11149833806
IFSC Code- SBIN0000626
मो.:–8627073780, 6230053105

उद्बोधक, प्रेरक व आवेदक
आपलोगों का अपना ही आचार्य महावीर सिंह
अध्यक्ष, दयानन्द मठ, चम्बा, हिमाचल प्रदेश

आठ समस्याएँ

– हरबन्स लाल चोपड़ा

जब हम ध्यानपूर्वक विचार करते हैं तो पता चलता है कि इस समय संसार के विचारशील व्यक्तियों के सामने आठ ऐसे प्रश्न उपस्थित हैं जिन पर धार्मिक जगत का मतभेद है। इन्हीं प्रश्नों अथवा मतभेदों ने संसार को टुकड़ों–टुकड़ों में विभाजित किया हुआ है।

पहला प्रश्न ईश्वर है अथवा नहीं? कुछ लोग ईश्वर की सत्ता को मानते हैं और कुछ लोग उसके अस्तित्व से इन्कार करते हैं। मानों इस प्रश्न ने संसार को दो दलों में बांट रखा है नास्तिक तथा आस्तिक।

दूसरा प्रश्न है – ईश्वर एक है अथवा अनेक?

तीसरा प्रश्न – ईश्वर कहाँ रहता है? सौवें आसमान पर, चौथे आसमान, स्वर्ग लोक में या बैकुण्ठ धाम में, काशी में या हरिद्वार में, गुरु की नगरी के हर मंदिर में, या किसी शिवाले में, मस्जिद में या गुरुद्वारे में, गिरजाघर में अथवा किसी विशेष स्थान में।

चौथा प्रश्न – भगवान कर्मों का फल किस प्रकार देते हैं? किसी फरिश्ते की रिपोर्ट पर अथवा चित्रगुप्त के बही–खाते के आधार पर, मुरशिद की शफात पर अथवा किसी पैगम्बर की अम्मत में दाखिल होने या न होने की बिना पर, गुरु की बखशीश अथवा किसी अवतार की कृपा पर खुदा के आखिरी नबी पर ईमान लाने पर या अमृत चखने पर या चरणामृत लेने पर।

पांचवां प्रश्न है – भगवान् की उत्पत्ति कैसे हुई? संयोगवश जगत पैदा हो गया, नेस्ति से हस्ति में आ गया। किसके कहने से यह जगत बन गया, अविद्या से पैदा हो गया या इच्छा मात्र से बन गया।

छठा प्रश्न – आत्मा और परमात्मा में कोई अन्तर है या नहीं यह एक ही सत्ता है अथवा दो भिन्न सत्ताएँ हैं? क्या आत्मा ईश्वर का अंश है या अलग पदार्थ है? क्या अनादि काल से इनका पिता पुत्र का सम्बन्ध है या सृष्टि बनने के बाद कोई रिश्ता स्थापित हो गया है? और यह सम्बन्ध प्रलय के समय समाप्त हो जायेगा? आत्माएँ नई–नई पैदा होती हैं अथवा अनन्तकाल तक वही रहती है?

सातवाँ प्रश्न है – अनादि पदार्थ कितने हैं? क्या यह संसार और प्रकृति और आत्माएं सदा से उसी एक सत्ता के आधीन हैं या सृष्टि बनने से पहले वह परमात्मा बिना प्रजा के रहता है और सृष्टि बनने के पश्चात् इसका मालिक बन जाता है।

आठवां प्रश्न – मुक्ति किस प्रकार होती है? कर्म से छुटकारा पाने से अथवा प्रायश्चित करने से, जप या पाठ करने से अथवा अन्धभक्ति से?

उपरोक्त आठ प्रश्न हैं जिन पर मत–मतान्तरों की दुनिया में वाद–विवाद है तथा आत्मिक और सामाजिक लड़ाइयाँ हैं। अब देखना यह है कि वह कौन से सत्य सिद्धान्त हैं, जिनसे इन आठों प्रश्नों का निर्णय हो सकता है। उपनिषद् में आता है।

एकोवश सर्वभूतान्तरात्मा, एकम्रूपम् बहुधायाकरोति तम आत्मस्थम् यो अनुपश्यन्ति धीरा तेषाम् सुखम् शाश्वतम नेतरेषाम्।

एकोवशे – सबको वश में रखने वाला सर्वशक्तिमान सर्वभूत अन्तरात्मा सब प्राणियों के अन्दर आत्मारूपी विराजमान, एकोरूपम् बहुधा या करोति एक प्रकृति से जो अनेक प्रकार की सृष्टि बना देता है, तमात्मस्थ उसको अपनी आत्मा में ठहरा हुआ, ये अनुपश्यन्ति जो देखते हैं, धीराःतेषाम् सुखम् ऐसे धीर पुरुषों को निरन्तर सुख मिलता है, शाश्वतमनेतरेषाम दूसरों को नहीं?

पहले दो प्रश्नों का उत्तर इस मंत्र में स्पष्ट रूप से मौजूद है। ईश्वर है अथवा नहीं तथा एक है या अनेक का उत्तर यह दिया गया है – एको, वह है और एक है। गुरुग्रन्थ साहब भी उपनिषद् के आधार पर कहता है – एक ओंकार। वास्तव में एक सतनाम कर्तापरख, निर्भय निर्विकार, अकालमूरत वाली गुरु वाणी में इस उपनिषद् वाक्य का कुछ सार मौजूद है।

तीसरा प्रश्न है, वह रहता कहां है? मुसलमान कहते हैं वह हाजिर नाजिर है फिर भी वह उसके रहने का स्थान सातवें आसमान पर मानते हैं। ईसाई उसे Omnipresent मानते हैं किन्तु उसके रहने का ठिकाना चौथे आसमान पर मानते हैं। सिख उसे गुरुद्वारे में मानते हैं या हर मंदिर की चार दीवारी के अन्दर बैठा हुआ मानते हैं। किन्तु, वेद कहता है सर्वभूतान्तरात्मा वह सर्वव्यापक है, सब प्राणियों के अन्दर विराजमान है। गुरुवाणी भी कहती है 'सतनाम' – वह एक रस रहने वाला है, वह घटता–बढ़ता नहीं, उसमें कमी अथवा बढ़ोतरी नहीं होती। जहाँ कमी या बढ़ोत्तरी होगी वहाँ दो या अनेक होंगे एक देशीय होंगे। एक जगह से दूसरे जगह जाने का गुण सर्वव्यापक में नहीं रह सकता। अतः परमात्मा है, वह एक है और सर्वव्यापक है। वह आदि है और अनन्त भी। इस प्रकार से तीसरे प्रश्न का भी उत्तर हो गया कि वह ईश्वर सर्वव्यापक है या सब भूतों के अन्दर विराजमान है तथा सब जीवों और पदार्थों के अन्दर विद्यमान है। वह सारी सृष्टि में रम रहा है। हर जगह विद्यमान मान लेने से चौथे प्रश्न का उत्तर भी मिल जाता है कि वह कर्मों का फल कैसे देता है। जब सर्वभूत अन्तरात्मा है अथवा हर जीवात्मा के अन्दर मौजूद है तो सबके कर्मों को साक्षी होकर वह देखता है और स्वयं ही उनका फल भी देता है। फिर गुरुवाणी के अनुसार जब वह निर्भय और निष्पक्ष तथा निर्विकार है किसी से डरता नहीं, किसी से पक्षपात नहीं करता, शत्रुता नहीं करता तो फिर वह किसी की सिफारिश कैसे मानेगा। वह क्योंकि निर्विकार है, अतः उसे किसी गवाही की आवश्यकता नहीं। उसके न्याय में पक्षपात का समावेश कभी नहीं होता इसीलिए उसे न्यायकारी दयालु भी कहते हैं। उससे कोई स्थान खाली नहीं हैं। अतः उसे किसी एजेण्ट के नियुक्त करने की आवश्यकता नहीं है। उसे न मंत्री की आवश्यकता है न कोषाध्यक्ष की। वह तो उनके बिना अपनी हुकुमत चलाता है, शासन करता है निर्विरोध। उसे हमारे कर्मों का लेखा–जोखा करने के लिए बही खाते की आवश्यकता नहीं।

अब प्रश्न आता है कि परमात्मा ने यह सृष्टि कैसी बनाई? इसका उत्तर 'एकंरूपम् बहुधाया करोति' एक प्रकृति से वह नाना प्रकार की सृष्टि को उत्पन्न कर देता है, विद्यमान है। जो लोग कहते हैं कि ईश्वर से पहले कुछ मौजूद न था वह भी सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए अपने सिद्धान्त का खण्डन स्वयं कर देते हैं। वह कहते हैं कि परमात्मा ने कहा – 'कुन' अर्थात् 'हो जा'। सवाल उठता है किसे कहा उस समय कोई अन्य वस्तु उनके विचार से विद्यमान न थी। इस प्रकार से जो लोग यह कहते हैं कि ईश्वर, जीव तथा प्रकृति अनादि नहीं है केवल ईश्वर ही अनादि है वह अपनी मान्यता के आधार पर उपरोक्त युक्ति में 'स्वयं' फंस जाते हैं और अपने सिद्धान्त का खण्डन करते हैं। सिख भाईयों का कहना है कि – 'हुक्मी हुवों आकार' इसका अर्थ वह यह करते हैं कि परमात्मा ने आज्ञा दी और यह सृष्टि बिना किसी के बन गई। किन्तु प्रश्न उठता है आज्ञा किसे दी, इसका उत्तर गुरू तेगबहादुर जी ने भी दिया है। आपने लिखा है –

पाँच तत्व को तन रच्यो जानो चतुर सुजान।
जिस बे उपजो नानका ले ताहि में मान।।

इस सारी सृष्टि के सारे तन अर्थात् जड़ और चेतन जीवों को परमात्मा ने पंच तत्वों अर्थात् अग्नि, वायु, जल, आकाश तथा पृथ्वी आदि तत्वों से रचा है। तात्पर्य यह है कि ये चीजे विद्यमान थीं तभी तो इन से रचा।

अब प्रश्न आता है जीव, ब्रह्म एक हैं व अलग–अलग। इसका उत्तर उपनिषद् के तमात्मस्थम वाक्य में विद्यमान है। वह आत्मा में स्थित है। मानो वह अन्य है और आत्मा अलग है। दोनों भिन्न–भिन्न पदार्थ है। वेद भी तो कहता है –

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिशस्वजाते।
तयोरन्यय् पिप्प३लं स्वाद विष्टम अन्योनीमचाकशति।।

दो सजातीय पक्षी वृक्ष पर बैठे हैं एक वृक्ष के फलों को चखता है और उसके फलों का भोक्ता है, किन्तु दूसरा साक्षी रूप में देखता रहता है। कर्ता व भोक्ता आत्मा है, परमात्मा साक्षी रूप में रहता है और प्रकृति वृक्ष है।

सातवां प्रश्न है अनादि पदार्थ कितने है, का उत्तर उपनिषद् के उपरोक्त मंत्र के अगले भाग में है, जिसमें कहा है अनुपश्यन्ति धारी अर्थात् धीर पुरुष देखते हैं अर्थात् देखने वाला जीव देखने की चीज प्रकृति और उसके अन्दर देखने योग्य वस्तु है परमात्मा। तीनों पदार्थ अनादि हैं।

अब अन्तिम प्रश्न लीजिए मुक्ति कैसे प्राप्त होती है। इस प्रश्न का उत्तर भी उपरोक्त उपनिषद् वाक्य में स्पष्ट है। मुक्ति का सुख उन लोगों को मिलता है जो 'आत्मास्थम अनुपश्यन्ति' ईश्वर को एक सर्वव्यापक अर्थात् सब के अन्दर मानते हैं। जो उसे जीवों के कर्मों के फल का देने वाला और प्रकृति से सृष्टि के उत्पन्न करने वाला जानते हैं, जो तीनों पदार्थ के अनादि होने में विश्वास रखते हैं। दूसरों को मुक्ति नहीं मिलती। सारांश यह है कि इस एक उपनिषद् वाक्य में उन तमाम उलझनों का उत्तर मौजूद है जिन्होंने दुनियां के टुकड़े–टुकड़े कर रखे हैं।

बच्चों का व्यवहार ठीक करने से पहले बड़े अपना व्यवहार ठीक करें

– सीताराम गुप्ता

घर में सबसे छोटा सदस्य है मेरा सवा–डेढ़ साल का पौत्र। वो मौका लगते ही झाड़ू उठा लाता है और लगता है फर्श पर झाड़ू लगाने की कोशिश करने। कभी वाइपर उठा लाता है और उसे चलाने लगता है। कोई भी कपड़ा मिल जाए उसे उठाकर पानी की बाल्टी में या जहाँ कहीं भी पानी मिले उसमें डुबोकर गीला कर लेता है और कभी फर्श पर पौंछा लगाने लगता है तो कभी मेज साफ करने लगता है। गाड़ी में अगली सीट पर बैठता है तो कभी रेडियो का वॉल्यूम बढ़ा देता है तो कभी एसी का। कभी वाइपर का लीवर घुमा देता है तो कभी गियर रॉड खींचने का प्रयास करता है। वो ऐसा क्यों करता है? वो ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वो हम सबको ऐसा करते हुए देखता है और उसे खुद करने की कोशिश करता है। यह अत्यन्त स्वाभाविक है। बच्चा खाली या शान्त नहीं बैठ सकता। उसे कुछ न कुछ खेल करना ही है। घर के सदस्यों के काम और दूसरे क्रियाकलापों की नकल करने से अच्छा खेल उसके लिए और कोई हो ही नहीं सकता।

प्रश्न उठता है कि क्या बच्चे के खेलने के लिए उसके पास खिलौने नहीं हैं जो वो घर की दूसरी चीजों से खेलने की कोशिश करता है? हैं, पर्याप्त हैं लेकिन वास्तविकता ये है कि यदि उसके चारों ओर बहुत सारी चीजें रखी हों तो वो उन सबसे भी खेलेगा। अपने आसपास की सभी चीजें उसे आकर्षित करती हैं। घर के सदस्य जिन चीजों का प्रयोग करते हैं और जैसे करते हैं वो भी उन सभी चीजों का उन्हीं की तरह या अपने तरीके से प्रयोग करना चाहता है। यही उसका खेल है। बच्चा खिलौनों से भी प्रायः तभी खेलता है जब दूसरे लोग उनसे खेलना शुरू करते हैं। वास्तविकता ये भी है कि लोग अपने बच्चों के लिए जो खिलौने खरीदते हैं
वो बच्चों की पसन्द के नहीं अपनी पसन्द के खरीदते हैं। वो खिलौने लाते हैं और बच्चे को बतलाते हैं कि ऐसे खेलो। लोग प्रायः खाने–पीने की चीजें भी बच्चों की पसन्द के बजाय अपनी पसन्द की ही लाते हैं। हम बच्चों से अपनी बात मनवाने या अपनी पसन्द उस पर थोपने का प्रयास करते ही रहते हैं।

बच्चा जब बड़ों की पसन्द के खिलौनों से खेलेगा, उनकी पसन्द की चीजें खाएगा तो ये भी स्वाभाविक ही है कि उनकी पसन्द या जरूरत के दूसरे काम भी उनकी तरह ही करने की कोशिश करेगा क्योंकि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से यही तो हम उसे सिखा रहे होते हैं। और यदि ऐसा करने से उसे रोकेंगे तो मचलने लगेगा। रोएगा। रूठेगा। उसका ये व्यवहार बड़ों से प्रश्न करना ही है कि जब आप सब लोग ये सब कर रहे हो तो मेरे करने में क्या बुराई है? उसका व्यवहार बिल्कुल ठीक है। यदि आप अपने सामने नहीं करने देंगे तो वो आँख बचाकर या पीछे से करेगा। तो नन्हे बच्चों को रोकने की बजाय वो जो करें करने दीजिए। बस उनकी सुरक्षा का ध्यान रखिए। उन्हें सर्दी–गर्मी, आग–पानी व गन्दगी से बचाने का प्रयास करते रहिए। जो चीजें उनके लिए खतरनाक या कोई दुर्घटना पैदा करने वाली हो सकती हों उनकी पहुँच से दूर कर दीजिए। खतरनाक रसायन व दवाएँ उनकी पहुँच से बहुत ऊपर रखिए।

यदि बच्चा इधर–उधर से कोई गलत चीज उठाकर मुँह में डालता है तो उसे रोकना जरूरी है। इसके लिए उसका पेट भरा होना भी जरूरी है। उसे सही समय पर उचित आहार दीजिए लेकिन खाने–पीने के मामले में भी बच्चे कम परेशान नहीं करते। अधिकांश बच्चे प्रायः दूध पीने या खाने से बचने की कोशिश करते हैं और जब घर के दूसरे या बड़े सदस्य भोजन करते हैं तो उनके भोजन में से उठाकर खाने का प्रयास करते हैं। ये तो बड़ी अच्छी बात है। इस बात का लाभ उठाना चाहिए। जब घर के बड़े सदस्य कुछ भी खाने के लिए बैठें तो ऐसा भोजन लेकर बैठें जो बच्चों के लिए भी अनुकूल हो। खुद भी खाएँ और बच्चों को भी खिलाएँ। जिन घरों में तीसरी या चौथी पीढ़ी के बुजुर्ग जैसे दादा–दादी, नाना–नानी या परदादा–परदादी आदि होते हैं बच्चों के लिए हर तरह

से बड़ा ठीक रहता है। बुजुर्ग प्रायः दलिया–खिचड़ी आदि लेते हैं तो बच्चा भी उनके साथ ये सब खाद्य पदार्थ ले लेता है जो उसके लिए ठीक रहते हैं।

इसके बाद सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है शिष्टाचार व नैतिकता के विकास का। अनुकरण अथवा नकल का हम सबके जीवन में बहुत महत्त्व है। नकल के बिना हम सीख ही नहीं सकते लेकिन गलत चीजों की नकल करना घातक है। बच्चा भी अनुकरण से ही सीखता है। वह बड़ों का ही अनुकरण करता है। अपने अंदाज में वो बड़ों की ही भाषा बोलता है और बड़ों की तरह ही बोलता है। हम शिष्टाचार का यथेष्ट पालन न करें और बच्चों को समझाएँ कि वो शिष्टाचार का पालन करें तो ये सम्भव नहीं। बच्चों को शिष्ट बनाना है तो माता–पिता को शिष्ट बनना होगा। हम घर में एक दूसरे से व मेहमानों या अन्य आगंतुकों से जैसा व्यवहार करते हैं अथवा जैसी भाषा बोलते हैं बच्चा भी उसी का अनुकरण करेगा। अभिवादन भी उन्हीं की तरह करेगा। लहजा उसका अपना होता है लेकिन भाव बड़ों का ही आ जाता है। माता–पिता व घर के अन्य सदस्यों में जैसी आदतें होती हैं बच्चा बड़ी सूक्ष्मता से न केवल उनका निरीक्षण करता रहता है अपितु उनकी नकल भी करता रहता है।

यदि बच्चों में सचमुच अच्छी आदतें डालनी हैं और उन्हें सुसंस्कृत बनाना है तो माता–पिता को भी स्वयं में अच्छी आदतें डालनी होंगी और सुसंस्कृत बनना होगा। बच्चा जब हमारे व्यवहार अथवा व्यक्तित्व में कमी अथवा दोगलापन पाता है तो वह विचलित हो जाता है। हमारी कथनी व करनी का अन्तर या किसी के सामने व उसकी पीठ पीछे उसके प्रति व्यवहार या आचरण में अन्तर बच्चे पर सबसे ज्यादा बुरा प्रभाव डालता है। वह समझ ही नहीं पाता कि कथनी ठीक थी या करनी ठीक है। उसे पता नहीं चल पाता कि किसी के सामने उसके बारे में कही गई बात ठीक थी या उसके जाने के बाद पहली बात के विपरीत कही गई बात उचित है। उसकी प्रशंसा या चापलूसी ठीक थी या उसकी आलोचना ठीक है। बच्चे के सम्पूर्ण आचरण व उसके नैतिक चरित्र के विकास में इन बातों का बड़ा प्रभाव पड़ता है। हम बात–बात पर गुस्सा करते हैं या झूठ बोलते हैं तो बच्चा भी ऐसा ही करेगा। हमारे व्यवहार अथवा आचरण में दोगलापन है तो बच्चे के व्यवहार व आचरण में भी वह जल्दी ही आ जाएगा।

प्रायः ऐसा होता है कि माता–पिता या घर के अन्य सदस्यों में कुछ कमियाँ होती हैं। यह स्वाभाविक है लेकिन कोई माता–पिता या घर का अन्य सदस्य ये नहीं चाहता कि उनके बच्चों में भी ये कमियाँ आएँ। वो बच्चों को उन कमियों से बचाने के लिए पूरा जोर लगा देते हैं। यहाँ स्वयं को ठीक करने की बजाय बच्चों को ठीक करने पर जोर होता है। इसके लिए समझाने से लेकर डाँटने–डपटने व मारने–पीटने तक सभी तरीके आजमाए जाते हैं लेकिन बच्चों पर इसका सकारात्मक नहीं नकारात्मक प्रभाव ही पड़ता है। बच्चों को जिन बातों के लिए जोर देकर रोकने का प्रयास किया जाता है बच्चे उन्हीं के बारे में सोचते रहते हैं और जो हमारी सोच होती है वही अंततोगत्वा हमारे जीवन की वास्तविकता में परिवर्तित हो जाती है। बच्चे भी इस प्रभाव से अछूते नहीं रहते।

गुण हों या अवगुण ऊपर से नीचे की ओर संक्रमित होते हैं। आपने सुना ही होगा कि जैसा बाप वैसा बेटा। जैसा राजा वैसी प्रजा। जहाँ राजा अथवा जनप्रतिनिधि अपने कर्त्तव्य का ठीक से पालन नहीं करता वहाँ प्रजा का भी अपने कर्त्तव्य पालन में शिथिल हो जाना अस्वाभाविक नहीं। राजनीति का स्तर गिरने का ही ये परिणाम है कि जनता में नैतिकता का निरन्तर ह्रास हो रहा है और भ्रष्टाचार लगातार बढ़ता ही जा रहा है। कोई तो हो जो ऊपर से वास्तव में एक अच्छी शुरूआत करे। नेताओं की करनी और कथनी के अन्तर ने सुधार की संभावनाओं को निर्मूल कर डाला है। मात्र चीख–चीखकर लच्छेदार भाषण देने से नैतिकता का विकास असम्भव है। प्रवचन अथवा नैतिक शिक्षा की किताबें छलावे अथवा व्यापार के अतिरिक्त कुछ नहीं। बच्चे ही नहीं हम सब भी अपने परिवेश से ही ज्यादा सीखते हैं अतः परिवेश को सुधारना अनिवार्य है। यदि हम वास्तव में चाहते हैं कि हमारे बच्चों में अच्छी आदतों व सही नैतिक मूल्यों का विकास हो तो उन सभी आदतों व नैतिक मूल्यों को स्वयं माता–पिता को भी अपने अन्दर विकसित करना होगा। दूसरा कोई उपाय या विकल्प हो ही नहीं सकता।

ए डी–106–सी, पीतमपुरा, दिल्ली–110034
चलभाष–9555622323

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज, सांगरिया द्वारा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मनाई गई

आप्त पुरुष योगीराज श्रीकृष्ण के चित्र को नहीं चरित्र को अपनाने की आवश्यकता

जोधपुर, 12 अगस्त 2020, आर्य समाज, सांगरिया के तत्वावधान मे योगेश्वर श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष में विशेष कार्यक्रम का आयोजन खेल प्रांगण, सेक्टर विवेक विहार में प्रातः 8.30 बजे देवयज्ञ का आयोजन कर किया गया।

इस पुनीत अवसर पर आर्य वीरदल राजस्थान के महामंत्री डॉ लक्ष्मण सिंह आर्य ने उपस्थित आर्य वीरों व वीरांगनाओ को श्री कृष्ण के जीवन से परिचित करवाते हुए कहा की भगवान श्री कृष्ण बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे वे जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक धर्म के मार्ग पर चले और कोई गलत काम नहीं किया इसीलिए आप्त पुरुष कहलाये।

सभा को सम्बोधित करते हुए आर्य वीर दल जोधपुर के अध्यक्ष श्री हरि सिंह आर्य ने कहा कि वर्तमान में श्रीकृष्ण के चित्र को नहीं चरित्र को अपनाने कि आवशयकता हैं। कार्यक्रम का शुभारम्भ देवयज्ञ का आयोजन श्री मदन गोपाल आर्य के संचालन में किया गया एवं आर्य वीरांगना प्रतिष्ठा सिंह द्वारा राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित कविता रश्मिरथी का पाठ कर किया गया।

यज्ञ में श्री भंवर लाल काला प्रदेशाध्यक्ष राजस्थान शिक्षक संघ, उमेद सिंह आर्य संचालक आर्य वीर दल जोधपुर, सुरेन्द्र सिंह प्रधान आर्य समाज सांगरिया, कुलदीप गहलोत कोषाध्यक्ष, सुरेंद्र गहलोत, धर्मेंद्र सिंह, दीपक गहलोत, महेंद्र सिंह शेखावत, फौजी साहब (रिटायर्ड कमांडो), महावीर गहलोत, भरत गहलोत, रवि गहलोत, रमेश गहलोत, भरत आर्य, कमलेश गहलोत, मुकुल आर्य आदि आर्य वीरों व गणमान्य सदस्यों ने भगवान श्री कृष्ण को याद किया एवं उनके चरित्र को अपनाने का संकल्प लिया।

अन्त में सुरेंद्र सिंह प्रधान आर्य वीर दल सांगरिया ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया और यज्ञ शेष का वितरण किया।

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर
लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।
अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 ● दूरभाष :– 011–23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।